

5934. *umherirren* RV. 10, 40, 5. KATHOP. 2, 5 = MUNP. UP. 1, 2, 8. — 2) *umkreisen, umfassen, einfassen, umspannen*: उरु ते त्रयः पर्यैति ब्रुधम् RV. 1, 95, 9. अर्कुरिव भोगैः पर्यैति ब्राह्म 7, 73, 14. न राधः पर्येतवे (vgl. 7, 40, 3) 8, 24, 21. परिं ज्ञायत्तमीयतुः । कस्ता वध्रम् 87, 3. तेषामाधानं पर्यैति कृतम् 10, 94, 8. AV. 8, 9, 18. 15, 1, 5. VS. 32, 11, 12. ÇAT. Br. 10, 5, 4, 4. 11, 3, 5, 6. BRH. ÅR. UP. 3, 3, 2. यो (गिरिः) नदौ गौतमो रम्यो गिरिं पर्यैति चार्बुदम् R. 6, 2, 27. — 3) *in Etwas rennen*: रूद्रस्यास्ता ते कृतिं परिं पृथ्यचित्या AV. 12, 4, 52. — 4) *erreichen*: गापत्री यज्ञमूर्खं परीयाय TS. 6, 1, 6, 6. सामाहं ह्यं परीयाय 7, 5, 8, 3. अग्ररत्नं न पर्यत् ÇAT. Br. 6, 2, 4, 7. स यावदादित्यः पुरस्ताडेदेता यथादस्तमेता वसूनामेव तावदाधिपत्यं स्वाराज्यं पर्यता KĀND. UP. 3, 6, 4. — 5) *mit oder ohne मनसा mit dem Geiste auffassen, erwägen*: मनसा तात पर्यैति क्रमशो विषयानिमान् MBh. 3, 12508. अन्त्यं सानुबन्धं यो विदित्वा सर्वकर्मसु । अर्थमर्थानुबन्धं च पर्येष्यति स पाण्डितः ॥ R. 5, 81, 4. — *partic. परीत 1) umkreisend*: जित्नुं त्रैगैर्तका योधाः परीताः पर्यवारयन् MBh. 14, 2167. — 2) *abgelaufen*: परीतकालः पुरुषो यत्कर्म प्रतिपद्यते R. 3, 37, 18. परोतकाला (3, 43, 22: परोतकल्प्या) हि गतायुषो नरा कृतं न गृह्णन्ति मुहुरिरीरितम् 5, 88, 25. — 3) *umgeben, umringt* (H. 1473); *erfüllt, in Besitz genommen, ergriffen*: धूमनापि परीताङ्गी दीप्तमग्निशिखामिव R. 1, 49, 16. विषवल्लीभिः परीतेव मन्कापधिः RAGH. 12, 61. जनाकीर्णम् — ऊतत्ररूपरीतं गृह्णामिव ÇĀK. 107. शोणितपरीताङ्ग R. 1, 2, 14. अश्रुपरीतेनत्रा 2, 76, 23. वैतन्त्रिकाधिप° Suçr. 2, 118, 12. वाणप° R. 3, 34, 18. तृष्या Hip. 1, 22. नृत्पिपासापरीताङ्गी N. 15, 17. नृत्प° 13, 34. मन्यु° 14, 5. MBh. 14, 1557. दुःखेन 1, 6203. N. 24, 40. दुःखप° 23, 23. BRĀHMAN. 3, 1. रोपप° R. 1, 23, 4. 4, 33, 1. भर्तृस्त्रिरूपरीतेन मयैतद्वत्कृते कृतम् 6, 89, 21. वेपथुप° 2, 63, 14. शोकपरीताङ्गी 3, 62, 37. धृतिपरीतमिवात्मानं दर्शितवान् PĀNĀT. 197, 20. — 3) MBh. 1, 8437 und 14, 1558 fehlerhaft für परीत (s. u. दा, ददाति mit परि) *anvertraut*. — Vgl. अंपरीत. — *intens. sich umwälzen; sich bewegen um, umkreisen*: युवो रयस्य परिं चक्रमीयते RV. 8, 22, 4. VĀLUK. 1, 8, 2, 8. परिं घामन्यदीयते (चक्रम्) RV. 1, 30, 19. 180, 10. उत रात्रीमुभयतः परीयसे 5, 81, 4. — Vgl. — पलि.

— *अनुपरि nach Jmd herumgehen; umkreisen*: संवत्सरं वा शृतद्वैवोऽनुपरिपति AV. 15, 17, 8. ÇAT. Br. 3, 7, 3, 7. 7, 4, 2, 35. 8, 7, 4, 10. KAUC. 61. तं विशेषे अनुपर्यति (nachlässig verkürzte Form; s. u. — प्रतिविपरि) सर्वाः 138. यो गङ्गामनुपर्यति R. 6, 3, 29.

— *अभिपरि partic. अभिपरोत erfüllt, überwältigt*: अत्यर्थपित्ताभि° Suçr. 2, 188, 5. 387, 9. मन्मथामि° MBh. 1, 2377. दुःखेन 3, 997. चित्तया R. 4, 1, 2.

— *प्रतिपरि in umgekehrter Richtung herumgehen* KĀT. ÇĀ. 5, 8, 30. 6, 3, 4. 48, 2, 3.

— *विपरि sich umwenden, umkehren*: विपर्येष्यती वा श्तावग्रिं भवतोऽत्येष्यती ÇAT. Br. 4, 2, 1, 15. 14, 7, 1, 2. fgg. (= BRH. ÅR. UP. 4, 3, 2, wo विपल्येति). विपर्येषि NĪ. 7, 23. *partic. विपरोत umgekehrt, verkehrt, in entgegengesetzter Richtung gehend, versetzt* ÅCV. ÇĀ. 9, 1. सिंहुः सक्तान्दिसेर्वा स्याद्विपरोतस्य NĪ. 3, 18, 20. 4, 10. P. 4, 2, 93, VĀRT. 2. विपरोतरत्त KĀURAP. 12. VET. 11, 9. विपरोतार्धमाहृतः VET. 17, 6. ÇRUT. 24. H. 128. 131. विपरोतं (असिं) गृह्णीत्वा MRĀKH. 22, 6. *das Gegentheil von Etwas (abl.) seiend, entgegengesetzt zu Werke gehend*: अतस्तु विपरोतस्य नृपतेः M. 7, 34. विपरोतस्तः (मन्त्री) R. 5, 81, 15. तद्विपरोतवृत्तिः RAGH. 2, 53.

तद्वत्संज्ञमैत्रो विपरोतानां तु विपरोता PĀNĀT. II, 37. M. 7, 163. 171. 8, 63. 257. JĀGĀN. 1, 337. 2, 188. BHAG. 18, 15, 32. HIT. III, 65. KATHĀS. 2, 55. *auseinander gehend, verschieden*: हूरमेते विपरोते KATHOP. 2, 4. *verkehrt* (in übertr. Bed.): विपरोतमिदं जगत् MBh. 3, 110. तदा वै त्रिपरोतियु मनः प्रकुरुते नरः R. 3, 62, 21. PĀNĀT. 1, 340. नृपः R. 2, 21, 3. °चित्त MBh. 3, 1004S. °चेतस् R. 6, 36, 15. °बुद्धि PĀNĀT. 92, 8. विपरोतौञ्चरण SIDDH. K. zu P. 4, 4, 63. *widerwärtig, ungünstig*: निमित्तानि MBh. 16, 1. BHAG. 1, 31. R. 3, 74, 11. शकुनानां पालम् N. (BOPP) 13, 24. *विपरोते पतिते* ÇUK. 43, 3.

— *प्रतिविपरि sich wieder umwenden*: कृविर्भिश्चरिष्यतः प्रतिविपर्यति (nachlässige Verkürzung; vgl. u. — अनुपरि) KĀT. ÇĀ. 5, 9, 2.

— *संपरि 1) umgehen*: दत्तिणां माण्डलं चेभो वरया संपरियतुः R. 6, 76, 32. — 2) *zusammenfassen, in sich fassen*: स एव सं भुवनानि पर्यत् AV. 19, 53, 4. अथैश्च प्रेशय मनुष्यमेतत्तौ संपरीत्य (ÇĀMĀ. = सम्यक्परिगम्य सम्यञ्जनसालोच्य) विविनक्ति धीरः KATHOP. 2, 2.

— *पला (= परा), पलायते P. 8, 2, 19, Sch. fliehen*: पलायते ÇAT. Br. 13, 3, 1. NĪ. 4, 2, 10, 11. मृगो मे विद्धः पलायते MBh. 3, 13182. पलायसे R. 3, 59, 10. वरमाणी पलायिष्याम् 7, 22. पलायधामतः त्तिप्रम् MBh. 3, 559. KATHĀS. 19, 72. राज्ञा — तस्मात्पलायत मरुभयात् MBh. 1, 3729. पलायं चक्रे PĀNĀT. 231, 22. BHATT. 5, 106. अंपलायिष्ट (vergleiche unter — विपला) 13, 56. पलाय्य gerund. ÇAT. Br. 1, 2, 4, 10. KATHĀS. 10, 125. VID. 213. 264. पलायितुम् PĀNĀT. 21, 19. HIT. 12, 2. 18, 15. पलायित *partic.* H. 805. PĀNĀT. 130, 2. HIT. 20, 14. KATHĀS. 7, 86. 13, 27. ep. auch act.: पलायामो भयातस्य MBh. 2, 613. पलायतः 1, 8212. *weichen, sich verlieren, aufstören*: तावदिदं स्वह्रपाध्यानं ममाकीर्तिकरे न पलायिष्यते HIT. 113, 14.

— *प्रपला davonfliehen, profugere*: दिशः । वानराः प्रपलायते R. 6, 25, 6. तत्सैन्यं प्रपलायिष्ट BHATT. 13, 114. प्रपलायितः PĀNĀT. 170, 12. प्रपलायितवान् KATHĀS. 12, 104.

— *विपला auseinander fliehen*: ततस्तु भृशसंत्रस्तस्याः सर्वः सखीजनः । व्यपलायत (also पलाय् als nicht zusammengesetzt behandelt) सर्वशः R. 2, 78, 13.

— *संपला insgesamt fliehen*: वानरानोक्तं संपलायिष्ट BHATT. 13, 47. — *पलि (= परि), पल्ययते P. 8, 2, 19, VĀRT. 1. herumgehen*: कामं पल्ययते ÇAT. Br. 2, 3, 2, 5. 14, 7, 1, 2. fgg. (= BRH. ÅR. UP. 4, 3, 2).

— *उपपलि sich zurückwenden*: उपपल्यय्य ÇAT. Br. 2, 4, 2, 22. 4, 3, 2, 4. — *विपलि sich umwenden, umkehren*: स पुनर्विपल्ययते ÇAT. Br. 7, 3, 2, 19. 11, 1, 2, 6. fgg. — Vgl. — विपरि.

— *प्र 1) hervortreten, auftreten; anheben* RV. 1, 40, 3. 80, 3. एति प्र कौतो 144, 1. 2, 41, 19. 3, 9, 3. प्र प्रकृतुं देवी मनीषा 7, 34, 1. तस्मात्तदात्पात्प्रीति रमो वृत्तादिवाक्तात् BRH. ÅR. UP. 3, 9, 28. परेषाम्नाम्प्रीहि (1) MBh. 1, 8414. प्रयति सर्ववीजानि राप्यमाषानि 3, 13116. प्र स्तोमी पृथ्ययै RV. 8, 92, 6. besonders von der Opferhandlung, die beginnt und sich entwickelt: प्रयति यज्ञे 3, 29, 16. 5, 28, 6. प्र यज्ञं शतुं हेत्वे । न सतिः 7, 43, 2. 8, 27, 13. प्र रतिरतिं वृत्तिनी वृत्ताची 6, 63, 1. VS. 4, 5. 27, 14. — 2) *fortgehen, weitergehen; ausgehen; betreten, gehen zu, kommen zu (acc.)*: प्र ते वध्रः प्रमूषन्ति शत्रून् RV. 3, 30, 6. 40, 4. 10, 84, 3. प्रेहि प्रेहि पथिभिः पृथ्यैभिः 14, 7. प्र यद्यः सहेस्वतो विद्यतो यतिं भानवः 1, 97, 5. प्र रापे यत् शर्षता अर्थः 7, 34, 18. प्र सोमस्य पवमानस्योर्गयं इन्द्रस्य यतिं ज्ञ-